अध्ययन सामग्री

स्नातक III (प्रतिष्ठा) (2022-25)

विषय हिन्दी

शीर्षक - अतिशयोक्ति अलंकार

पदनाम - डॉ० नन्दकिशोर प्रताप केसरी

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

अतिशयोक्ति

उपमेय को छिपाकर उपमान के साथ उसकी अभेद प्रतीति कराना अतिशयोक्ति अलंकार है ।

'अतिशयोक्ति' का अर्थ है अतिशय कथन या बढ़ा–चढ़ा कर कहना । इस अलंकार में उपमेय को छिपा कर उपमान के साथ अभेद स्थापित किया जाता है । अर्थात् उपमान उपमेय का निगरण (निगलना) कर लेता है और उपमान के द्वारा ही उपमेय का ज्ञान होता है । जिस प्रकार निगरण की गई वस्तुत बिलकुल नहीं दिखायी पड़ती, उसी प्रकार अतिशयोक्ति अलंकार में उपमेय का नाम भी नहीं लिया जाता, वहाँ केवल उपमानही शेष रह जाता है । इस अलंकार में उपमान प्रधान बनकर उपमेय का अस्तित्व ही नष्ट कर देता है और हम उपमान के द्वारा ही उपमेय का बोध करते हैं ।

इसके निम्नांकित भेद हैं –

रूपकातिशयोक्ति :– जब उपमान के द्वारा उपमेय का ज्ञान हो तो रूपकातिशयोक्ति होती है–

राम सीय सिर सेंदूर देहीं ।
सोभा कही न जाति विधि केहीं ।।
अरून पराग जलज भर नींके ।
ससिहि भूष अहि लोभ अमी के ।।

बालकांड, दोहा–325/8

उक्त छन्द राम के द्वारा सीता के माँग में सिंदूर भरने के प्रसंग का है । यहाँ सिंदूर, करतल, सीता की माँग, राम की लम्बी भुजा–उपमेय–का बोध क्रमशः अरूण पराग, जलज, शशि तथा अहि–उपमान के द्वारा कराया गया है । केवल उपमान के द्वारा ही उपमेय का बोध कराये जाने के कारण यहाँ रूपकातिशयोक्ति अलंकार है ।

मरकत कनक बरन बरजोरी ।
देखि सुरन्हभै प्रीति नथोरी ।।

बालकांड, दोहा–315/8

यहाँ मरकत (श्यामवर्ण) कनक (पीलावर्ण) इन दो उपमानों के द्वारा ही राम और लक्ष्मण का बोध कराया गया है ।

मरकत मणि और स्वर्ण ये दोनों अपने रंग के कारण क्रमशः श्यामवर्ण श्रीराम और गौर वर्ण लक्ष्मण के वर्णों का बोध कराते हैं । यह कवि के वर्णन–कौशल की महत्ता का परिचायक है ।

मलिन बसन बिबरण बिकल कृस सरीर दुखभार ।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ।।

अयोध्याकांड, दोहा–163

उक्त दोहे में मलिन वसना, दुखिता कौशल्या का बोध–वन में पाले से आहत सोने की सुन्दर कल्पलता के द्वारा कराया गया है । यहाँ 'कनक कलप बरबेलि' उपमान के द्वारा ही शोक पीड़िता कौशल्या–उपमेय का बोध कराये जाने से रूपकातिशयोक्ति अलंकार है ।

सम्बन्धातिशयोक्ति :– जहाँ सम्बन्ध न रहने पर भी सम्बन्ध बताया जाय, वहाँ सम्बन्धातिशयोक्ति अलंकार होता है ।

प्रभु प्रताप बड़वानल भारी ।
सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी ।।
तव रिपुनारि रूदन जल धारा ।
भरेउ बहोरि भयउ तेहिं खारा ।।

लंकाकांड, दोहा– 1/2

यहाँ नारियों के रूदन जल से समुद्र का भरना असम्बद्ध है । आँसू से कभी समुद्र नहीं भर सकता, पर यहाँ वैसा होना कहा गया है, अतः असम्बन्ध में सम्बन्ध–कथन होने के कारण सम्बन्धातिशयोक्ति अलंकार है ।

द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना ।
पुरजन पेमु न जायं बरवाना ।।

अयोध्या कांड, दोहा– 220/7

कितना भी मर्मस्पर्शीवाणी होने के बावजूद वज्र और पत्थर द्रवीभूत नहीं हो सकते । यहाँ भरत के द्वारा विहवलतापूर्वक राम के स्मरण करने से कुलिश (वज्र) तथा पषान (पत्थर) द्रवीभूत होते बताये गये हैं । अतः असम्बन्ध में सम्बन्ध का कथन होने से सम्बन्धातिशयोक्ति अलंकार है ।

असंबंधातिशयोक्ति :– जहाँ सम्बन्ध रहने पर भी असंबंध बताया जाय, वहाँ असंबंधातिशयोक्ति होती है ।

अति सुन्दर लखि सिय मुख तेरो ।
आदर हम न करत ससि केरो ।।

बालकांड

यहाँ चन्द्रमा में सीता के मुख की समता करने की क्षमता होने पर भी उसे अयोग्य बताया गया है, अर्थात् सम्बन्ध में भी असम्बन्ध की अभिव्यक्ति हुई है, अतः असम्बन्धातिशयोक्ति है ।

अक्रमातिशयोक्ति :– जहाँ कार्य और कारण का एक साथ होना कहा जाये ।

वानासन तें राबरे, बान विषम रघुनाथ ।
दससिर सिर धरतें छुटे, दोऊ एकहिं साथ ।।

पहले बाण छूटता है, तब कोई वस्तु बिंधती है । यहाँ राम के धनुष से बाण छूटना और रावण का सिर कटना एक ही साथ कहा गया है । अतः कारण (बाण छूटना) और कार्य (सिर कटना) दोनों का एक साथ कथन होने से अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ।

अत्यन्तातिशयोक्ति :– जहाँ कारण के पूर्व कार्य का सम्पन्न होना बताया जाये ।

राजन राउर नाम जस, सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिप–मनि मन अभिलाष तुम्हार ।।

अयोध्याकाण्ड, दोहा– 3

फल–प्राप्ति (कार्य) पीछे होती है । यहाँ अभिलाष (इच्छा) फल का अनुगामी है, अर्थात फल ही पहले मिल जाता है और अभिलाष पीछे होता है । अतः यहाँ अत्यन्तातिशयोक्ति है ।

बानर कटक उमा मैं देखा ।
सो मूरूख जो करन चह लेखा ।।

किष्किंधाकांड, दोहा– 22/1

किसी वस्तु की संख्या की गणना की जा सकती है, पर सेना में बानर की संख्या की गणना को यहाँ असंभव बताया जा रहा है । अतः अत्यन्तातिशयोक्ति अलंकार है ।

प्रकारान्तर से यह भाव भी परिलक्षित होता है कि जो राम अखिल विश्व के स्वामी और सर्वशक्तिमान् हैं उनकी सैन्य शक्ति भी अगणित है ।